पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नैतिक शिक्षा

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि किस चीज़ की वजह से लोग ज़्यादा जन्नत में जायेंगे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह से डर और अच्छे चरित्र की वजह से, पूछा गया कि किस वजह से लोग ज्यादा जहन्नम में जाएंगे पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुबान और शर्मगाह (गुप्तांग)

आप पूरे संसार वालों के लिये दयालू कृपालू और अध्यापक एवं प्रशिक्षक बना कर भेजे गये थे। आप का पवित्र जीवन चाहे वह नबी बनाये जाने से पहले का हो या नबी बनाए जाने के बाद, हर क्षण मानवता को मार्गदर्शन करते हैं यही वजह है कि जब माई आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से आप के चरित्र, नैतिकता और व्यवहार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया आप का चरित्र और नैतिकता कुरआन था यानी आप का जीवन कुरआन का व्यवहारिक आदर्श और रूप था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसी आदर्श को अपनाने में दुनिया व आखिरत की भलाई व कामयाबी है और इसी चरित्र के सहारे हम दुनिया वालों के सामने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद की सच्ची छवि पेश कर सकते हैं, जो लोग हमें नफरत की निगाह से देखते हैं हम इसी चरित्र और अच्छे व्यवहार के बलबूत उनको अपने से करीब और उनको अपना समर्थक बना सकते हैं। क्योंकि सदाचार और नैतिकता के अन्दर अल्लाह ने वह प्रभाव रखा है जिस का ऐतराफ बड़े बड़ों ने किया और इस्लाम की खूबियों को स्वीकार किया है। बुखारी में आप के चरित्र को इन शब्दों में बयान किया गया है कि आप न तो बुरे स्वभाव के हैं, न सख्त स्वभाव के, न ही बाज़ारों में शोर व हंगामा करते हैं और न ही बुराई का जवाब बुराई से देते हैं बल्कि मआफी का मामला करते हैं। आप के सेवक हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप की आदतें सब लोगों से अच्छी थीं और स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से सबसे बेहतर वह है जिस की आदतें सबसे अच्छी हों अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण व व्यवहार को अपनाएं और इसको जन्नत में जाने का माध्यम बनाएं। आप को नबी बनाया जाने से पहले सच्चा और एमानतदार कहा जाता था। आप ने अपने चरित्र एवं व्यवहार से लोगों को प्रभावित किया और हर एक के दुख दर्द के साथी बने रहे। नबी बनाये जाने के बाद जब आप पर अल्लाह की तरफ से पहली वह्य (प्रकाशना) अवतरित हुई तो आप परेशान हो गये लेकिन आप की जीवन साथी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आप को तसल्ली देते हुए कहा ''हर्गिज़ नहीं आप खुश हो जाएं अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला आप को कभी रूस्वा नहीं करेगा, अल्लाह की क़सम आप तो रिश्ता नाता जोड़ते हैं, सच बोलते हैं, लोगों का बोझ सहन करते हैं जरूरतमन्द को कमा कर देते हैं, मेहमाननवाज़ हैं और हक़ के मामले में डट कर मदद करते हैं, उपर बयान की गई हदीस में उसी चरित्र का बयान है जो जन्नत में ले जाने का सबब बनेगा। एक मौक़े पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अच्छे स्वभाव और चरित्र वाला इन्सान रोज़ेदार और रात में इबादत करने वाले के स्थान को पा लेता है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अच्छे आचरण वाला बनाए। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

अक्टूबर 2021 वर्ष 32 अंक 8

रबीउल अव्वल 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नैतिक शिक्षा 2

2. फिर भी हम नसीहत क्यों नहीं पकड़ते? 4

3. दुआ के क़ुबूल होने की घड़ियाँ 6

4. मीरास के बटवारे में देर क्यों? 9

5. नौजवान-मिल्लत की बहुमूल्य पूँजी 12

6. इस्लाम धर्म और कल्याणकारी सेवाएं 14

7. ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं 17

8. नैतिक प्रशिक्षण के प्रकार 21

9. प्रेस रिलीज (रबीउल अव्वल का चाँद) 23

10. अपील 24

11. क़ुरआन की खूबियों का एतराफ 25

12. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 27

13. कलेन्डर 2022 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

फिर भी हम नसीहत क्यों नहीं पकड़ते?

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

समय की सबसे बड़ी ट्रेजडी और ज़माने की सबसे बड़ा संकट पाठ और उपदेश के सारे उपाय और कुल काम का नाकाम और बेअसर होता चला जाना है। इबरत और प्रवचन सबके सब बेकार और बेनतीजा होते जा रहे हैं। इन्सान पर किसी तरह का नर्म गर्म, क्रिया प्रतिक्रिया, कर्म का फल, पुण्य और सज़ा, नेमत व रहमत और विपदा व अत्याचार कुछ भी असर करता दिखाई नहीं दे रहा है। हज़ारों ताज़ियाने और कितने ही अज़ाब व प्रकोप उन पर बरस रहे हैं लेकिन इन्सान इनसे नसीहत पकड़ने के लिये तैयार नहीं है। लाख प्रकोप नाज़िल हो जाये, कठिनाइयों और परीक्षाओं का ढेर लग जाए फिर भी इन्सान इन ठोकरों में आने के बाद सँभलने और सफल होने के बजाए और ज़्यादा सरकश और बुराई व फसाद पर उतारू होता चला जा रहा है जिस भलाई और दया व करूणा के बदले में उसे इन्सानी जीवन की मोहलत मिली है उस जीवन को सफलता और कामयाबी में बदलने के बजाए इसे नाशुकरी, उजडपन और घमण्ड में गुज़ार कर नेमतों से वंचित और सख्त सज़ा का पात्र बनता जा रहा है। आह! आखिर इन्सान को हो क्या गया है। इन्सान को सांप भी सूंध जाए तब भी इस पर दवा और दुआ का असर देर सवेर हो जाता है। घातक और लाइलाज बीमारी जिस में इन्सान घुलता चला जाता है और इस पर ''न मरे न मन जावे'' की स्थिति तारी रहती है फिर भी वह दृढ़ आशा रखता है, एलाज से बाज नहीं आता और शिफा और स्वस्थ होने से कदापि निराश नहीं होता। निराशा के वातावरण में भी वह उम्मीद के चिराग जगाए रखता है। पल भर की खबर नहीं होती सामान सौ बरस का रखना चाहता है मगर आह वह मिली हुई दौलत और नेमत की नाक़दरी का ऐसा आदी है कि कण भर न नेमत की कीमत पहचान करके इसकी कद्र करता है और न ही अपने पालनहार की दया व करूणा का आभास व एहसास ही है आप स्वयं ही बताइये कि कोई बन्दा दूसरों का मोहताज होने और दूसरों की दौलत पर पलने बढ़ने के बावजूद यह सब कुछ भुला कर बल्कि अहंकार और घमण्ड का शिकार होकर खुद ही देने वाला बन बैठे, एहसान जताने लगे, खुद को सब कुछ समझने लगे तो अल्लाह को कितनी नाराज़गी होगी उसके क्रोध और गुस्से की क्या स्थिति होगी और ऐसे बेहैसियत इंसान का क्या अंजाम होना चाहिए? जबकि संसार में ऐसे लोगों के बुरे अंजाम के वाक़आत भरे पड़े हैं ऐसे लोग न दुनिया के रहे और न आखिरत की भलाई पाई बल्कि दर्दनाक अज़ाब और सख्त प्रकोप के पात्र ठेहरे।

चुनान्चे कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''इन से पहले नूह की कौम ने और रस वालों ने और समूद ने और आद ने और फिरऔन ने और बिरादराने लूत ने और ऐका वालों ने और तुब्बा की कौम ने भी झुठलाया था, सबने पैगम्बरों को झुठलाया पस मेरा वाद-ए-अज़ाब उनपर सादिक़ आ गया।'' (सूरे क़ाफ-१२-१४)

कुरआन में फरमायाः

''क्या हमने अगलों को हिलाक

नहीं किया फिर हम उनके बाद पिछलों को लाए हम गुनेहगारों के साथ इसी तरह करते हैं'' (मुर्सिलात १६-१८)

जब इन्सान संसार में होने वाले परिवर्तनों और रोज़मर्रा के हालात से पाठ नहीं लेता बल्कि घमण्ड व अहंकार की वजह से उस पर अल्लाह की नेमतों और बरकतों की नाशुकरी के लक्षण जाहिर होने लगते हैं तो समझ लें कि अल्लाह की रहमतें और नेमतें रूठने लगी हैं और इन्सान की उलटी गिन्ती शुरू हो गई है। इसके विपरीत जब इनसान इबरत व उपदेश पकड़ने लगे और जब वह खुशी व गम हर हाल में अल्लाह को पुकारे और अल्लाह से दुआओं उसकी शुक्रगुज़ारियों और आज्ञापालन में लग जाए तो समझ लीजिए कि भलाई बाकी और खैरियत है। इसी लिये अल्लाह ने इन्सानों को अपनी जात पर गौर करने और इबरत पकड़ने की दावत दी है।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और खुद तुम्हारी जात में भी बहुत सी निशानियां हैं, तो क्या तुम देखते नहीं हो और तुम्हारी रोज़ी और जो तुम से वादा किया जाता है सब आसमान में है। असामान और ज़मीन के परवरदिगार की क़सम यह बिल्कुल बरहक़ (सत्य) है ऐसा ही जैसा कि तुम बातें करते हो'' (सूरे जारियात, २१-२३)

कुरआन में फरमायाः

क्या हमने तुम्हें ज़लील पानी से (वीर्य से) पैदा नहीं किया और हम क्या खूब अन्दाज़ा करने वाले हैं। उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? जिन्दों को भी और मुर्दों को भी और हमने इसमें बुलन्द व भारी पहाड़ बना दिये और तुम्हें सैराब करने वाला मीठा पानी पिलाया। उस दिन झूठ जानने वालों के लिये वाय और अफसोस है'' (मुर्सिलात-२०-२८)

आज की विडंबना यह है कि हम सब कुरआन करीम में पैगम्बरों (अलैहिमुस्सलाम) और उनकी कौमों के वाक़आत को सुनते हैं जगह जगह नसीहत और प्रवचन की आयात को पढ़ते हैं, कुरआन की तिलावत के वक़्त स्वर्ग व नरक के उल्लेख से गुज़रते हैं और इस संसार के बाक़ी न रहने और आखिरत के शाश्वत जीवन जैसी हकीकतों से अवगत होते हैं और इनके अलावा अपने आस पास में घटित होने वाले परिवर्तनों को देखते हैं, कभी सैलाब, तो कभी तूफान आता है, कभी अकाल पड़ता है, कभी जलज़ला आता है और कभी कोरोना जैसी घातक महामारी देखते ही देखते पूरे जगत को अपने लपेट में ले लेती है लेकिन हम हैं कि इससे सबक नहीं हासिल करते, तौबा नहीं करते अल्लाह से मआफी नहीं मांगते उजडपन और सरकशी नहीं छोड़ते। इससे बड़ी महरूमी (दुर्भाग्य) क्या हो सकती है। अल्लाह तआला हमारे इस व्यवहार की तरफ इशारा करते हुए फरमाता है ''और क्या उनको दिखाई नहीं देता कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार किसी न किसी आफत में फंसते रहते हैं फिर भी न तौबा करते हैं और न नसीहत कुबूल करते हैं।'' (सूरे तौबा-१२६)

ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएं, आस पास के हालात से पाठ प्राप्त करें। अल्लाह की नेमतों की कद्र और उसका शुक्र अदा करें, घमंड व अहंकार का रास्ता छोड़ कर उस से तौबा और माफी मांगें इसी में हमारी दुनिया व आखिरत में कामयाबी का राज निहित है। अल्लाह की रहमत व करूणा का दर्या ठाठें मार रहा है यह हम पर निर्भर है कि हम इससे कितना लाभान्वित हो रहे हैं ''बेशक अल्लाह तआला की रहमत नेक काम करने वालों के करीब है''। (सूरे आराफ-५६)

दुआ के कुबूल होने की घड़ियाँ

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

आज उम्मते मुस्लिमा सख्त दुर्दशा में लिप्त है, मुश्किलात में घिरी है उसे विभिन्न चैलेन्जों का सामना है और उम्मत के सचेत अफराद उम्मत की बेहतरी, सम्मान एवं उत्थान और उसकी महानता की प्राप्ति और वापसी की दुआएं कर रहे हैं मगर ऐसा लगता है कि

आखिर तो दुश्मनी है दुआ को असर के साथ

दुआ की रफ्तार थम चुकी है, तासीर उससे रूठ गई है और कुबूलियत अपना रिश्ता तोड़ चुकी है इसलिये हालात विभिन्न हैं, समस्याएं जूं की तूं हैं, कहीं कोई फर्क़ नहीं, दुआ का कोई असर नहीं, आखिर ऐसा क्यों?

दुआ की बेअसरी का गिला तो है लेकिन

दुआ कभी हमने मांगी है दुआ की तरह

अल्लाह तआला ने जब बन्दों को दुआ करने का हुक्म दिया, इसकी प्ररेणा दी और इसे कुबूल करने का वादा किया तो साथ ही इन को कुछ ऐसी घड़ियाँ, स्थान और आदाब (शिष्टा) सिखलाए हैं कि अगर वह इन फज़ीलत वाली घड़ियों में दुआ करेंगे और इन बरकत वाले समय में अल्लाह से माँगेंगे तो उनकी दुआऐं असर करेंगी, कुबूल होंगी। इस लिये दुआ से पहले यह जानना ज़रूरी है कि हम इसे कब माँगें और किस तरह मांगें ताकि वह कुबूल हो जाऐं और हम अल्लाह की निगाह में महबूब बन जाएं।

स्पष्ट रहे कि दुआ की कुबूलियत के लिये यह ज़रूरी है कि हम दुआओं का एहतमाम ऐसे वक़्त में करें जिन में कुबूल होना शत प्रतिशत कनफर्म हो, झोली भरने और मकसद पूरा होने का पूरा चान्स हो। इस्लामी शरीअत की रहनुमाई (मार्गदर्शन) और पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गाइडलाइन के अनुसार ऐसी घड़ियाँ आध्यात्मिक क्षण, अल्लाह से करीब होने और दिलों में मचलने वाले जज़बात को पेश करने के बेहतरीन अवसर निम्नलिखित हैं।

१. रात को आखिरी तिहाई हिस्सा बड़ी मुबारक घड़ी है और दुआ के कुबूल होने की ज़्यादा से ज़्यादा उम्मीद होती है। इस खूबसूरत क्षण के बारे में शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह० फरमाते हैं कि ''रात के आखिरी हिस्से में इन्सानों के दिलों में अल्लाह तआला की तरफ ध्यान, अल्लाह से करीब होने का जज़बा पाया जाता है दिलों की यह स्थिति दूसरे समय में नहीं पाई जाती है।''

यह ऐसी घड़ी है जिस में अल्लाह ने मांगने वालों और माफी का सवाल करने वालों की प्रशंसा की है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

(''और रात के आखिरी हिस्से में) अल्लाह से माफी मांगने वाले हैं।'' (सूरे आले इमरान-१७)

कुरआन में अल्लाह तआला

ने फरमायाः

'' (नेक लोग इबादत की वजह से) रात में कम सोते थे और (नेक लोग) सेहरी (सुबह) के वक़्त गुनाहों की माफी मांगते थे'' (सूरे ज़ारियात-१७-१८)

यही वह क़ीमती लमहा है जिस में अल्लाह तआला आसमाने दुनिया पर उतरता है और एलान करता है कि कौन मुझ से दुआ करता है कि मैं उसकी दुआ कुबूल करू? कौन मुझ से मांगता है कि मैं उसे दूं? कौन मुझ से मग्फिरत मांगता है कि मैं उसके गुनाह माफ कर दूं? (बुखारी ११४५ मुस्लिम ७५८)

२. जुमा के दिन की एक घड़ी जिस में दुआ कुबूल की जाती है इसके बारे में कई कथन हैं मगर दलील की रोशनी में दो कथन वरीयता योग्य हैं।

१. इमाम के मिंबर पर बैठने से लेकर नमाज़ के खतम होने तक। इसकी दलील वह हदीस है जिस में आप ने फरमायाः ''वह (घड़ी वक़्त) इमाम के मिंबर पर बैठने से लेकर नमाज़ के खतम होने के दर्मियान है'' (सहीह मुस्लिम ८५३)

२. अस्र के बाद से सूरज डूबने तक। इसके बारे में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं जुमा का दिन बारह साअत (घड़ी) का है। (इसमें एक घड़ी ऐसी है) कि कोई मुसलमान बन्दा इस में अल्लाह तआला से दुआ मांगता है तो अल्लाह उसे ज़रूर देता है इस लिये तुम इसे अस्र के बाद आखिरी घड़ी में तलाश करो'' (अबू दाऊद किताबुस्सलात १०४८, नेसई, किताबुल जुमा-१३८६)

इमाम इब्ने कैइम रह० फरमाते हैं कि इस मस्ले में जितने कथन बयान किये गये हैं इनमें सर्वश्रेष्ठ (राजेह) दो कथन हैं जो सही हदीसों में बयान किये गये हैं और इन दो में भी दूसरा कथन (अस्र के बाद से सूर्यास्त तक) ज़्यादा राजेह है। अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहो अन्हो, अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो और अहमद बिन हंबल रह० अधिकतर सलफ इसी कथन के पक्षधर हैं। (जादुल मआद १/४८२)

(३) रात में आँख खुलने के बाद निम्नलिखित दुआएं करें। दुआ के कुबूल होने की एक बेहतरीन घड़ी यह भी है कि जब रात के किसी हिस्से में आंख खुले तो पहले यह दुआ पढ़ लें इसके बाद दुआ मांगें तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक दुआ कुबूल की जाएगी। उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स रात में नींद खुलने के बाद यह कहे ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुलको वलाहुल हमदो वहुआ अला कुल्ली शैइन कदीर अलहम्दुलिल्लाही व सुब्हानल्लाही वल्लाहो अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाह'' इसके बाद कहे ''अल्लाहुम मग्फिरली'' या कोई दुआ करे तो उसकी दुआ कुबूल होती है फिर अगर उसने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ भी मकबूल होती है।'' (बुखारी ११५४)

इसी तरह सजदे में रोज़े की हालत में सफर में मांगी हुई दुआओं को अल्लाह कुबूल करता है इस लिये हमें इन वक़्तों में दुआओं का

एहतमाम करना चाहिये जैसा कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इसकी शिक्षा दी है फरमाते हैं ''बन्दा सजदे की हालत में अपने रब से करीब होता है इसलिये इसमें खूब दुआ करो।'' (सहीह मुस्लिम ४८२) सजदे में खूब दुआएं मांगों वह ज़रूर कुबूल कर ली जाएँगी। (सहीह मुलिम ४७९)

दूसरी हदीस में फरमायाः ''तीन शख्स की दुआएं रिजेक्ट नहीं की जाती हैं, पिता की दुआ, रोज़ेदार की दुआ और मुसाफिर की दुआ'' (बैहकी ६६१९)

अगर अल्लाह क्षमता व सामर्थ दे मक्का जाएं तो अरफा ९ जिल हिज्जा के दिन १० जिलहिज्जा को मश्अरे हराम के पास (जो मिना की दिशा से मुजदलफा के किनारे स्थिति है) सफा व मरवा पर, सुगरा व उस्ता पर कंकड़ी मारने के बाद, इन ६ स्थानों पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करते हुए किबले की तरफ रूख करके हाथ उठा कर दुआओं का एहतमाम करें। यह मसनून है और कुबूलियत के करीब तरह है। इन्शाअल्लाह

अल्लाह हमें क्षमता दे, अपने दर का सवाली बनाये, हमारी मांग को न ठुकराए, हमारी मांगें पूरी हों।

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

मीरास के बटवारे में देर क्यों?

मौलाना असअद आज़मी, वाराणसी

यूं तो समाज में, खानदान और रिश्तेदारों में मतभेद के बहुत से कारण होते हैं। इन कारणों का जायज़ा लेंगे तो एक महत्वपूर्ण सबब बाप दादा की मीरास की तक़सीम (बटवारे) का मामला भी होता है इस तक़सीम में भी कई तरह के झगड़े होते हैं। कभी कभी छोटी छोटी बातों को लेकर आपस में गलतफहमियां पलती रहती हैं और समय पर समाधान न होने से वह लड़ाई और नफरत व दुश्मनी का सबब बनती है।

वरासत के सिलसिले में पैदा होने वाले विवाद के विभिन्न कारणों में से एक कारण वरासत की तक़सीम में देरी बल्कि यूं कह लीजिए गैर मामूली देरी भी है। अल्लाह के फैसले के अनुसार हर शख्स एक तय उमर गुज़ार कर इस दुनिया से चला जाता है और अपने पीछे बीवी बच्चे और दूसरे रिश्तेदारों को छोड़ता है। उसका तर्का कम हो या ज़्यादा, नक़दी की शकल में हो या जमीन जायदाद की शकल में, हर एक से उसकी मिलकियत (स्वामित्व) खतम हो जाता है और उसका कुल छोड़ा हुआ माल व असबाब उसके वारिसों की मिलकियत हो जाता है। क़ुरआन और हदीस में तमाम वारिसों के अधिकार तय कर दिये गये हैं इसी रोशनी में हर एक को उसका हिस्सा दिया जाता है।

किसी भी शख्स के निधन के बाद उस के छोड़े हुए माल में से उसकी तजहीज़ व तक़फीन का प्रबन्ध ा करने, अगर कर्ज़ है तो उसे अदा करने, अगर जायज़ हुदूद के अन्दर वसिय्यत की है तो इसे लागू करने और इस तरह का कोई और मामला हो तो उसे निमटाने के बाद घर वालों को चाहिए कि आपस में बैठ कर पहली फ़ुर्सत में वरासत की तक़सीम का काम अंजाम दें इसमें अकारण देर करना किसी तरह दुरूस्त नहीं है। लेकिन देखा जाता है कि अधिकतर लोग इसमें देर करते हैं जिस की वजह से नये मसाइल खड़े हो जाते हैं जिन से आसानी से बचा जा सकता है।

इसमें दर के पीछे कभी कभार कुछ गलत कल्पनाएं और ख्यालात भी होते हैं मिसाल के तौर पर बाज लोग यह समझते हैं कि वरासत की तक़सीम कोई अच्छी बात नहीं बल्कि जिस तरह हम अपने पिता या मां बाप की ज़िन्दगी में मिल जुल कर रहते थे उसी तरह रहेंगे। अर्थात वरासत की तक़सीम को एक ऐब के तौर पर देखा जाता है और इस वजह से इसे टाला जाता है जबकि आज नहीं तो कल वह तक़सीम होकर रहेगी लेकिन बहुत ज़्यादा खराबी पैदा होने के बाद।

वरासत की तक़सीम शरई तक़सीम है। इससे शर्माने हिचकिचाने या इसे आपसी मेल जोल के खातमे का सबब बिल्कुल नहीं समझना चाहिए। देखा यह जाता है कि जिस ख्याली एकता को बाकी रखने के लिये वरासत की तक़सीम से बचा जाता है और टाल मटोल की जाती है आगे चल कर वह एकता मीरास की तक़सीम के मसाइल को लेकर ऐसी नफरत, दुश्मनी और विवाद में बदल जाता है कि अल्लाह की

पनाह।

वरासत की तक़सीम में देर का मसला कभी कभार यहाँ तक पहुंच जाता है कि दूसरी नसल रूखसत होना शुरू हो जाती है अर्थात एक शख्स के निधन के बाद वर्षों बाद तक उसकी मीरास तक़सीम नहीं होती यहां तक कि उसकी औलाद के निधन का सिलसिला शुरू हो जाता है। अब पोते लोग दादा की मीरास तक़सीम करें। इस दौरान छोड़ी हुई जायदादों में काफी परिवर्तन हो चुके होते हैं और तक़सीम का मामला बड़ा कठिन हो जाता है।

बाप की मीरास में तक़सीम में देर होने की वजह से आम तौर से यह भी होता है कि लड़के बाप की जायदाद में कुछ इज़ाफ़ा करते हैं जो उनकी मेहनत से होता है इसी तरह बाप के ज़रिये शुरू किये गये कारोबार में उसके गुज़रने के बाद एक लड़का या कुछ लड़के उसे तरक़्क़ी दे कर बहुत आगे ले जाते हैं इन तमाम हालात में देर से मीरास की तक़सीम होती है तो इन लड़कों में और दूसरे वारिसों में अधिकार पाने के मामले को लेकर बड़े मतभेद होते हैं तो कभी कभार अगली नसलों तक हस्तांतरित होते रहते हैं।

कुछ औरतें बाप की वरासत में अपना हिस्सा लेने से इसलिये हिचकिचाती हैं कि इस तरह भाइयों के यहाँ उसके आने जाने का हक़ खतम हो जाएगा और संबन्ध टूट जायेंगे जबकि ऐसा कुछ नहीं, यह खून का रिश्ता है माल जायदाद का नहीं। बहुत से जगहों से यह शिकायत मिलती है कि वहां बहनों या औरतों को सिरे से हिस्सा ही नहीं दिया जाता, इस गलत काम को सहीह ठेहराने के लिये विभिन्न गलत व्याख्याओं का सहरा लिया जाता है। कभी यह कहा और सोचा जाता है कि बहनों को तो दहेज़ दे दिया गया अब उनको मीरास में से कुछ देने की ज़रूरत नहीं है। कभी यह कहा जाता है कि बहनों ने मआफ कर दिया लेकिन कभी किसी भाई के मआफ करने की बात नहीं कही जाती यह और इस प्रकार के दूसरे कारण और सबब की कोई हक़ीक़त नहीं।

वरासत की तक़सीम के ज़िम्मेदार (जैसे बड़े भाई वगैरह) तक़सीम न करने का यह सबब पेश करते भी सुने जाते हैं कि कोई माँग ही नहीं कर रहा है इसलिये मैं कैसे तक़सीम करूँ यह सबब पेश करना भी अनुचित है। बाप के गुज़रने और उससे संबन्धित अधिकारों की अदायगी (भुगतान) के तुरन्त बाद तक़सीम का काम शुरू कर देना चाहिए किसी की मांग करने का इन्तेज़ार नहीं करना चाहिए।

वरासत की तकसीम के वक़्त वरासत पाने वालों को आपस में नर्मी और उदारता का प्रदर्शन करना चाहिये। कोई बड़ा है उसने बाप के साथ ज़्यादा काम किया है, छोटे भाई ने कम काम किया है इसलिये उसे कम मिलना चाहिए, इस तरह की बातें आपसी भाई चारा के बिल्कुल खिलाफ हैं। अपने सगे भाई बहनों के लिये भी अगर कोई इतनी रवादारी (उदारता) नहीं दिखा सकता तो बड़े अफसोस की बात होगी। ऐसे पाई पाई का हिसाब करने की मानसिकता वाले देखे जाते हैं कि वह सुकून और संतोष की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारते।

वरासत की तक़सीम एक दीनी फरीज़ा है जिसे किसी भी तरह के बहानों से खतम नहीं किया जा

सकता। पवित्र कुरआन के अन्दर वरासत की तक़सीम के मामले को पूरी तफसील से बयान कर दिया गया है। पुरूष और स्त्री, छोटे और बड़े हर एक का हक और हिस्सा तय कर दिया गया है जिस का जो हक़ है उसे मिलना चाहिए, मर्द हो या औरत छोटा हो या बड़ा। अल्लाह तआला ने मीरास के मसाइल को बयान करते हुए कहीं ''फरीज़तुम मिनल्लाही'' कहीं ''वसीयतुम मिनल्लाह'' कहीं ''नसीबम मफरूज़ा कहीं ''तिलका हुदूदुल्लाही'' कह कर इस की अहमियत और अनिवार्यता को स्पष्ट कर दिया है। इन अहकाम (आदेशों) का पालन करने वालों का अच्छा परिणाम और खिलाफवर्जी (उल्लंघन) करने वालों का बुरा परिणाम क्या हो गा इसे भी दो टोक शब्दों में बयान कर दिया गया है। सूरे निसा में मीरास के मसाइल तफसील से बयान करने के बाद अल्लाह तआला फरमाता हैः

''यह हदें अल्लाह की निध ार्रित की हुई हैं और जो अल्लाह तआला की और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की फरमांबरदारी करेगा उसे अल्लाह तआला जन्नतों में ले जायेगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जिनमें वह हमेशा रहेगा और यह बहुत बड़ी कामयाबी है और जो शख्स अल्लाह तआला की और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी करे और उसकी तयशुदा हदों (समीओं) से आगे निकले उसे नरक में डाल देगा जिस में वह हमेशा रहेगा। ऐसों ही के लिये अपमानजनक अज़ाब है।'' (सूरे निसा, १३-१४)

सारांश यह है कि

वरासत की तक़सीम में देर से बचा जाये।

वरासत की तक़सीम को समाजी ऐब न समझा जाए।

तक़सीम में कुछ नर्म गर्म हो तो सहन किया जाए।

तक़सीम के मामले में सख्ती और हठधर्मी का प्रदर्शन न किया जाये।

तक़सीम के मसले को लेकर रिश्ते में दराड़ न आने दी जाए।

मीरास की तक़सीम अल्लाह की तरफ से एक फरीज़ा है, इसकी खिलाफवर्जी पर सख्त सज़ा की चेतावनी दी गई है।

अमीरे मोहतरम का तालीमी तर्बियती कनवेन्शन से ख़िताब

जामिया हसना लिल बनात हसना एजूकेशन ट्रस्ट तिलकोबाड़ी अरर्या बिहार के द्वारा आयोजित ६ सितंबर २०२१ को आयोजित तालीमी व तर्बियती कन्वेंशन से संबोधित करते हुए मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि कुरआन व हदीस के अन्दर अनेकों स्थान पर आपसी एकता पर जोर दिया गया है और इख्तेलाफ, हसद, कीना कपट और वैमनस्यता से बचने का सख्ती के साथ हुक्म दिया गया है लेकिन अफसोस है कि आज मुसलमानों ने इस्लाम की इन सुनेहरी तालीमात को भुलाकर अपने आप को आपसी विवाद व मतभेद में डाल दिया है। उन्होंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सबको आपसी एकता स्थापित करने और बदगुमानी से बचने की नसीहत की। ओलमा-ए-किराम के सम्मान पर बल दिया। शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी और गांव एवं महल्लों में सुबह व शाम बच्चों की शिक्षा के लिये मकातिब के क़याम पर जोर देते हुए दुआइया कलिमात के साथ अपनी बात खतम की।

आखिर में प्रोग्राम के कनवीनर मौलाना मुफीजुददीन रियाजी ने तमाम लोगों का शुक्रिया अदा किया।

नौजवान-मिल्लत की बहुमूल्य पूँजी

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

स्रोत, उसकी तरक्की का सतंभ और उसकी इज्ज़त व सौभाग्य का प्रतीक हैं वह इसकी असल पूंजी और भविष्य की बहुमूल्य पूंजी और मजबूत बुनियाद हैं, उनकी इज्ज़त हमारी इज्ज़त उनकी कमजोरी हमारी कमजोरी और उनका नुकसान हमारा नुकसान है। जीवन में उनका रोल महत्वपूर्ण है, उन ही के ऊपर सभ्यताएं स्थापित हैं और उनके प्रयासों से उम्मते मुस्लिमा विभिन्न मैदानों में मुददतों से तरक़्की कर रही है अगर इन का उपयोग भलाई को साधारण करने और राष्ट्र व समुदाय के निर्माण के लिये किया जाए तो बहुत बड़ी नेमत साबित हो सकते हैं।

जवानी की नेमत अल्लाह की बड़ी नेमतों में से है जिस से उसने इन्सान को सम्मानित किया है। इसकी अहमियत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि क्यामत के दिन जिन सवालों का जवाब दिये बिना इंसान के क़दम हट नहीं सकेंगे उनमें से एक सवाल जवानी के बारे में हो गा कि उसने अपनी जवानी का चरण दो कमज़ोर चरणों के बीच स्थिति होता है यानी बचपन और बुढ़ापे के दम्रियान अतः इन्सान को इसकी गंभीरता और अहमियत को समझना चाहिए। जवानी ताक़त और ऊर्जा का स्टेज होता है जिसे अल्लाह के आज्ञापालन और ऐसे कामों में लगाना चाहिए जो उसके लिये और पूरे समाज व सूसाइटी के लिये हितकारी हो। नौजवानों ने इस्लाम के शुरूआती दौर में इस्लाम के प्रचार व प्रसार में अहम भूमिका निभाई और विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों को सहन करके सफल हुए।

नसलों को गलत राह पर जाने से बचाने की सब से बड़ी ज़िम्मेदारी मां बाप और परिवार की होती है वह इन की अच्छी तर्बियत पर ध्यान दें कुमार्ग के तमाम रास्तों को बिल्कुल बन्द कर दें और इसे अपने जीवन की महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में शामिल करें। बुखारी शरीफ की मश्हूर हदीस है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आदमी अपने घर का संरक्षक है और उससे उसके अधीन तरह औरत अपने पति के घर की संरक्षक है जिसके बारे में उससे पूछ गछ होगी। इसके अलावा मदर्सा जो घर के बाद सबसे अहम प्रशिक्षण केन्द्र है इसका भी बेराहरवी (कुमार्ग) को रोकने में अहम रोल है क्योंकि एक अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण का केन्द्र होता है। शिक्षाधीन बच्चों को गलत रास्तों से दूर रखना उसकी ज़िम्मेदारी है अगर वह नेक और अच्छे चरित्र वाला होगा, जिम्मेदारी के संबन्ध में गंभीर और समाज का शुभचिंतक होगा तो उसको शिक्षाधीन बच्चों को गलत रास्तों से दूर रखने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

बच्चों का बेकार और खाली रहना भी इनहिराफ और बेराहरवी का एक बहुत बड़ा कारण है क्योंकि अगर इन को सकारात्मक कामों में नहीं लगाया जायेगा तो यक़ीनन वह गलत कामों में लगे रहेंगे और इसके खतरनाक परिणाम होंगे इसलिये मां बाप खानदान, अध्यापक एवं प्रशिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि बच्चों को बेकार न छोड़ें और उनके खाली औक़ात पर कड़ी निगाह रखें

इस पर भी नज़र रखें कि उन के साथी, दोस्त किस स्वभाव के हैं क्योंकि बुरी संगत बच्चों के लिये सबसे खतरनाक है। मुसनद अहमद में है अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आदमी अपने दोस्त के मज़हब व तौर तरीके पर होता है इसलिये इनसान को देखना चाहिए कि वह किस से दोस्ती कर रहा है।

नौजवानों के कन्धों पर जो जिम्मेदारी है वह बहुत महान है खास तौर से मौजूदा हालात में इसकी अहमियत और ज़्यादा बढ़ गई है। यह दुनिया एक बन्दरगाह है जिससे आप जन्नत के रास्ते का सामान उठा कर ले जायें या जहन्नम तक जाने वाले सफर का। उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करना चाहिए और कौम ने उनसे जो आशाएं लगा रखी हैं उनको पूरा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए उन्हें ऐसा महसूस करना चाहिए कि वह अल्लाह के दरबार में खड़े हैं और हिसाब किताब हो रहा है इसलिये हर सवाल का जवाब तैयार रखना चाहिए।

क़ौम के नौजवानों की अपने देश और अपनी कौम के तईं बड़ी अहम ज़िम्मेदारी है जिस को निभाने के लिये उन्हें निम्न बातों की जानिब ध्यान देना चाहिए। (१) नौजवान इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि अल्लाह ने उनको क्यों पैदा किया? फिर वह अपने जीवन के सफल होने का व्यवहारिक सूबूत पेश करें हालात जैसे भी हों अपने परवरदिगार की हमेशा इबादत करते रहें और इबादत का वह तमाम तरीक़ा अपनाएँ जिससे अल्लाह राज़ी हो जाए। अपने पैदा किये जाने का मकसद का ज्ञान दीन का पाबन्द बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इसके माध्यम से लोगों के बीच भलाई विकसित होती है। (२) नौजवानों के लिये यह भी ज़रूरी है कि वह यह साबित करके दिखाएं कि उनका आचरण भी इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार है लोग उनकी जुबान और हाथ से सुरक्षित हैं जब लोगों की उन पर नज़र पड़े तो उनको इन में इस्लाम की जीती जागती तसवीर नज़र आए।

(३) नौजवानों से यह भी अपेक्षित है कि वह उच्च शिक्षा और खास कर रेफ्रेशर कोर्सेज के माध्यम से अपनी क्षमता में बढ़ोतरी करने की कोशिश करें ताकि वह अल्लाह के इस फरमान ''अपने उस रब के नाम से पढ़ो जिसने तुम्हें पैदा किया'' का व्यवहारिक तस्वीर नज़र आएं, मेडिकल केमिस्ट्री, इंजीनियरिंग फिजिक्स ज्योलोजी की शिक्षा और इन विषयों में कुशलता प्राप्त करने के बाद राष्ट्र एवं समुदाय की सेवा करें और इसके साथ ही अल्लाह का भय भी अपने दिल में पैदा करें। नौजवानों की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है कि वह हिक्मत व बुद्धिमानी, नर्मी एवं संयम से दूसरों की इस्लाह करने की कोशिश करें। जो इस्लाह के काम का पाबन्द और जिस के अन्दर दावती जजबा पैदा हो जाता है वह अपने दोस्त या साथी को गुमराही के गडढ़े में गिरते हुए नहीं देख सकता बल्कि उसके पास हिकमत व बुद्धिमानी और समझ बूझ की जो क्षमता है उसके द्वारा अपने साथी को अल्लाह तक मार्गदर्शक करने और उससे करीब करने का जतन करता है उसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हदीस से प्ररेणा मिलती है कि अल्लाह तआला तुम्हारे माध्यम से एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो यह तुम्हारे लिये दुनिया और दुनिया की सब चीज़ों से बेहतर है। अल्लाह तआला हम सभी लोगों को अपनी जिम्मेदारियों को समझने और भली भांत इनको निभाने की क्षमता दे।

इस्लाम धर्म और कल्याणकारी सेवाएं

मौलाना आसिफ़ तनवीर तैमी

इस्लाम धर्म ने जिस तरह नमाज़, रोज़ा हज और ज़कात के बारे में स्पष्ट किया है उसी तरह समाज की बेहतरी एवं जनकल्याण के सिद्धांतों को भी बयान किया ताकि समाज हर एतबार से सुगम और मुहब्बत व भाईचारा से सुसज्जित हो। समाज का हर काम केवल मुआवज़ा और बदले या कीमत लेकर किया जाये इस्लाम इस तरह के विचारों का प्रोत्साहन नहीं करता बल्कि बहुत सारा समाजी काम बिला मजदूरीऔर बदले के भी होता है बल्कि हर बड़ा समाजी काम आपसी मेल जोल से ही पूरा होता है। इसी लिये इस्लाम ने आपसी एकता पर जोर दिया है और जन-हित के कामों को एक दूसरे के साथ मिल कर करने पर बल दिया है जिस का मक़सद समाज को एक आइडियल समाज बनाना है।

कुरआन व हदीस और इस्लामी तारीख व पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी के अध्ययन से मालूम होता है कि लोक कल्याण और जन सेवाएं इस्लाम की विशेषता है और इस दुनिया और आखिरत में बड़ा पुण्य मिलता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अन्य नबियों (पैगम्बरों) ने यह कर्तव्य निभाया है और सहाबा किराम की ज़िन्दगी में इस तरह के हितकारी कार्यों के विभिन्न उदाहरण मिलते हैं जिन्हें पढ़ कर हौसला मिलता है कि इस तरह के भलाई और कल्याणकारी कामों में हमें भी शरीक होना चाहिए। समाज के हित को अपने निजी हित पर वरियता और प्राथमिकता देनी चाहिए।

पवित्र कुरआन से यह शिक्षा और प्रेरणा मिलती है कि जिस तरह हमें नमाज़, रोज़ा जक़ात की चिंता होनी चाहिए उसी तरह अन्य नेकियों पर ध्यान होना चाहिऐ अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमायाः

''और नमाज़ काइम करो और ज़कात दो और जो भलाई भी तुम अपने लिये आगे भेजो गे उसे अल्लाह के पास पाओ गे, अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को खूब देख रहा है'' (सूरे बक़रा-११०)

अल्लाह तआला ने अपने ऊपर, आखिरत पर फरिश्तों के पर, आसमानी किताबों पर और तमाम नबियों पर ईमान लाने के साथ साथ एसे मामलों को चिन्हित किया है और जिन का सीधा संबन्ध जन सेवाओं से है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''हक़ीक़ी मानों में नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरे पूर्व व पश्चिम की तरफ फेर लो बल्कि नेकी तो यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर, आखिरत के दिन पर, फरिश्तों पर, पवित्र कुरआन पर और तमाम नबियों (पैगम्बरों) पर और अपना प्रिय माल खर्च करे रिश्तेदारों पर, अनाथों पर, मिस्कीनों पर, मुसाफिरों पर, मांगने वालों पर और गुलामों को आज़ाद करने पर और नमाज़ स्थापित करे और ज़कात

दे और जब कोई अहद (वचन) करे तो उसे पूरा करे और दुख व मुसीबत में और मैदाने कारज़ार में सब्र से काम ले, यही लोग (अपने कथनी व करनी) में सच्चे हैं और यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं।'' (सूरे बक़रा-१७७)

पवित्र कुरआन में कुछ सुनहरे वाक़आत भी हैं जिन से जन सेवाओं की प्ररेणा मिलती है और मालूम होता है कि जन सेवाओं की अहमियत और उपयोगिता हर ज़माने में रही है। कुरआन करीम में जुल करनैन, खिज्र और मूसा अलैहिस्सलाम की जन सेवाओं का उल्लेख है जिन का संबन्ध समाजी और कल्याणकारी सेवाओं से है।

मूसा अलैहिस्सलाम का मदयन शहर की दो लड़कियों के जानवरों को पानी पिलाने का वाक़आ हमें जन सेवाओं के लिये प्रेरित करता है। अल्लाह तआला ने कुरआन में इस घटना को पाठ प्राप्त करने के लिये बयान किया है कुरआन में इस घटना को इस तरह बयान किया गया हैः

''और जब मदयन की तरफ रवाना हुए तो दिल में कहा, उम्मीद है कि मेरा रब सीधी राह की तरफ मेरा मार्गदर्शन (रहनुमाई) करेगा और जब मदयन के कुवें पर पहुंचे तो वहाँ लोगों की एक भीड़ देखी जो अपने जानवरों को पानी पिला रही थी और उनसे कुछ दूरी पर दो औरतों को पाया जो अपनी बकरियों को रोक रही थीं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या मामला है? उन्होंने कहा कि हम अपनी बकरियों को इस से पहले पानी नहीं पिला सकेंगे कि तमाम चरवाहे अपनी बकरियां हटा लें और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं तो मूसा ने उनकी बकरियों को पानी पिला दिया, फिर मुड़ कर छाँव में चले गे और दुआ की कि मेरे रब! इस वक़्त जो भलाई भी मेरे लिये भेज दे मैं उसका मोहताज हूं'' (सूरे किसस् २२-२४)

मूसा अलैहिस्सलाम ने सफर की तमाम कठिनाइयों और थकान के बावजूद कल्याणकारी कामों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया बल्कि स्वयं दोनों औरतों की बकरियों को भीड़ में ले जाकर पानी पिलाया।

जन सेवा से संबन्धित एक वाक़आ मूसा अलैहिस्सलाम और खिज़्र का है दोनों सफर के दौरान चलते चलते एक बस्ती में पहुंचें, भूख से निढ़ाल थे बस्ती वालों से आतिथ्यसत्कार का अनुरोध किया किसी ने आतिथ्यसत्कार नहीं किया फिर भी दोनों ने मिल कर गांव में गिरने वाली एक दीवार को सीधी कर दी। अल्लाह ने इस घटना को कुरआन में इस तरह बयान किया हैः

''फिर दोनों चल पड़े यहां तक कि एक बस्ती वालों के पास आए, उनसे खाना मांगा तो उन्होंने दोनों की मेज़बानी (आतिथ्यसतकार) करने से इनकार कर दिया फिर इस बस्ती में दोनों को एक दीवार मिली जो गिरना ही चाहती थी, उसने उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा, अगर आप चाहते तो इस काम की मजदूरी ले लेते'' (सूरे क़हफ-७७)

कल्याणकारी कामों से संबन्धित पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अनेकों हदीसें हैं जो हमें मानव सेवा और जन सेवा की प्रेरणा देती हैं।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''अगर मुसलमान कोई पौदा या बाली लगाता है और इससे पक्षी,

इन्सान या चौपाया खाता है तो इस का भी सवाब मिलता है। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं, एक सवार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और दायें बायें देखने लगा। इस अवसर पर आप ने फरमायाः जिस के पास ज़रूरत से ज़्यादा सवारी हो वह दूसरे को दे, जिस के पास ज़रूरत से ज़्यादा खाना पीना हो वह भी दूसरे को दे और भी कई चीज़ों का आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उल्लेख किया। यहां तक कि हमने समझा कि बचे हुए सामान में हमारा कोई हिस्सा नहीं है।'' (सहीह मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैंने एक शख्स को देखा वह स्वर्ग में उलट पलट कर रहा था। (खुशी के मारे फूले नहीं समा रहा था) इस की वजह यह थी कि उसने दुनिया में रास्ते में आने वाले एक एक ऐसे पेड़ को काटा था जो लोगों को दुख पहुंचा रहा था'' (सहीह मुस्लिम)

अबू दरदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''क्या मैं रोज़ा, नमाज़ और सदक़ा से ज़्यादा अफज़ल चीज़ के बारे में न बताऊं सहाबा ने कहा ज़रूर बताएं फिर आप ने कहा लोगों के बीच में समझौता कराओ'' (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''हर मुसलमान को सदक़ा करना चाहिए। सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम ने पूछा कि अगर किसी के पास कुछ न हो तो क्या करे। आप ने कहाः मज़दूरी करके अपने आप को भायदा पहुंचाए और सदक़ा करे। सहाबा किराम ने पूछाः अगर कोई इसकी भी क्षमता न रखे तो आप ने कहाः किसी मजबूर और बेबस की मदद करे। कहा अगर कोई इसकी भी ताक़त न रखता हो तो लोगों को भलाई के बारे में बताए और बुराई से रोके या कम से कम स्वयं ही बुराई से रूक जाये'' (सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काबा के निमार्ण में स्वयं शरीक हुए। वह्य (प्रकाशना) के अवतरित होने के वक़्त ख़दीजा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आप की जिन खूबियों को बयान किया था उनमें जन सेवाओं का भी उल्लेख है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस औरत की कब्र पर गये जो मस्जिद में झाड़ू लगाती थी और जनाज़े की नमाज़ पढ़ी।

अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो खलीफ़ा बनने के बाद भी अपने गाँव महल्ले के जानवरों का दूध दुहते थे। उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी बीवी को उस औरत की मदद के लिये भेजा था जो प्रसव पीड़ा से जूझ रही थी और अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो खलीफा होते हुए बैतुल माल में झाड़ू लगाते थे।

इन दलीलों से इस्लाम में जन सेवाओं की अहमियत का पता चलता है इसलिये अगर ऐसे कामों का मौक़ा मिले तो पूरी निष्ठा के साथ अपनी ज़िम्मेदारी निभाने की कोशिश करनी चाहिए।

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं

नवास बिन समआन रज़ियल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २६४८)

अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

अबू बकरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उमरा और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाही शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाही आये तो अपनी ताकत भर उसे शैतान की तरफ लौटा दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो गे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों की वजह से नहीं टूटता हैः सद-क-ए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान

उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहे गा मेरे जलाल से मुहब्बत करने वाले कहां हैं, उस दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, उस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम) आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी)

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस **मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

देश के विभिन्न स्थानों में सैलाब से जानी व माली नुक़सानात का जायज़ा और सहयोग की अपील.

देश के विभिन्न स्थानों विशेष रूप से महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार और यूपी आदि के बाज़ ज़िलों में गैर मामूली बारिश की वजह से सैलाब की खराब स्थिति और इसके परिणाम में होने वाले भारी जानी व माली नुकसानात सख्त रंज व गम का कारण हैं और इस मुसीबत की घड़ी में आप सब ही से इन्सानियत के नाते सहयोग की अपील है। मुसीबत ग्रस्त एलाकों सैलाब के कारण तबाही बढ़ती जा रही है इसलिये प्रभावित लोग सब्र और संयम का दामन थामे रहें और आपसी भाई चारा और आपसी सहयोग का विशेष ख्याल रखें। इसके अलावा राष्ट्र व समुदाय के शुभचिंतकों से बिना धर्म के अन्तर के अपील की जाती है कि वह मुसीबत की इस घड़ी में मानवता के रिश्ते को निभाते हुए अपने भाइयों की भरपूर मदद करें। इसी तरह राज्य एवं केन्द्र सरकारों से मांग की जाती है कि प्रभावितों को राहत पहुंचाने, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवजे के सिलसिले में उचित इकदामात करें। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सहयोग से सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा का एक प्रतिनिधमण्डल सैलाब प्रभावित एलाकों में रिलीफ का काम करके वास लौटा है और अपनी जायजा रिपोर्ट में वहाँ और ज़्यादा सहयोग की सिफारिश की है सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा के सचिव मौलाना सरफराज़ अहमद असरी और उप सचिव इंजीनियर अफजालुर्रहमान साहब आदि पर आधारित यह सुबाई प्रनिनिधमण्डल जिसे मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष और सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा के कार्यवाहक अमीर हाजी वकील परवेज की अगुवाई में रवाना होना था और जिसके एक सदस्य जनाब हनीफ इनआमदार सहाब खाज़िन सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा भी थे और यह दोनों प्रतिष्ठत ज़िममेदारान रवानगी के लिये तैयार भी थे लेकिन चन्द कारणों की वजह से प्रतिनिधमण्डल में शामिल न हो सके लेकिन फिर भी हाजी वकील परवेज साहब ने अपने साथियों के साथ बड़े एहतमाम से प्रतिनिधमण्डल को रवाना किया और इस दौरान हाजी वकील परवेज़, जनाब हनीफ इनामदार साहब प्रतिनिधिमण्डल और संबन्धित जगहों के पदधारियों से बराबर संपर्क में रहे। अल्लाह तआला इनको अच्छा बदला दे।

मर्कज़ी जमीअत ने मुसीबत की इस घड़ी में प्रभावितों के लिये दुआ और तमाम भाइयों विशेष रूप से अपनी तमाम राज्य इकाइयों के पदधारियों से उनकी मदद के लिये अपने अपने राज्यों से भपरूर सहयोग की अपील की है। निःसन्देह इतने बड़े पैमाने पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और इस तरह की प्राकृतिक आपदाएँ ज़मीन पर बसने वाले हम इन्सानों के पापों के साधारण हो जाने की वजह से भी आती हैं और इस तरह अल्लाह तआला सँभलने के लिये कभी कभी अपनी निशानियाँ ज़ाहिर करता है और अपने बाज़ बन्दों को आज़माता है इस लिये इस से बन्दों को पाठ हासिल करना चाहिए और सब्र एवं आत्मनिरीक्षण से काम लेना चाहिए और विश्व स्तर पर जहाँ भी लोग तरह-तरह की परेशानियों में लिप्त हैं सबके लिये अल्लाह से आफियत की दुआ करनी चाहिए और सहयोग में जहाँ तक संभव हो हिस्सा लेना चाहिए। अल्लाह तआला प्रभावितों की विशेष मदद फरमाए और हम सबको हर तरह की मुसीबतों व बीमारियों से सुरक्षित रखे और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की क्षमता दे। आमीन

अपील कर्ताः- **असगर अली इमाम महदी सलफी**

अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द व अन्य जिम्मेदारान व सदस्यगण

चेक/डराफ्ट इन नामों से बनायें।

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c: 629201058685
ICICI Bank (Chandni Chowk Branch)
RTGS/NEFT IFSC Code-ICIC0006292

Ahle Hadees Relief Fund
A/c No. 200110100007015
Bombay Mercantile Cooperative Bank LTD
IFSC Code: BMCB0000044
Branch: Darya Ganj, New Delhi

नैतिक प्रशिक्षण के प्रकार

डा० मुक़्तदा हसन अज़हरी रह०

मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण

इससे अभिप्राय यह है कि सन्तान में श्रेष्ठ गुणों को उत्पन्न करने का प्रयास किया जाये, जिसके द्वारा मानव अस्तित्व की पूर्णता होती है तथा मनुष्य के व्यक्तित्व में श्रेष्ठता तथा सन्तुलन उत्पन्न होता है, जैसे साहस, स्पष्ट वाक पटुता, वीरता, स्वाभिमान, त्याग, सन्तोष, धैर्य तथा सद्भावना आदि।

मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को निम्नलिखित दोषों से दूर रखा जाये जैसे।

लज्जा, भय, हीनभावना, ईर्ष्या तथा क्रोध।

लज्जा

लज्जा (शर्म) से अभिप्राय यह है कि बच्चों में एकान्तवास की भावना आ जाये तथा यह लोगों से मिलने जुलने से कतराये। यह एक प्रकार का दोष है।

भय

भय अर्थात ख़ौफ यदि सावधानी की सीमा तक हो तो उचित है, परन्तु इसकी अधिकताा से बच्चों में मनोवैज्ञानिक उलझन उत्पन्न होती है जिसका आगामी जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भय की अधिकता के विभिन्न कारण होते हैं। जैसे मां का बच्चों को भूत प्रेत से डराना तथा अनदेखी वस्तुओं से भय दिलाना, अधिक लाड प्यार तथा उसके लिये अनावश्यक चिन्तित रहना, बच्चे को घर में ही सीमित करके रखना, तथा भूतों की काल्पनिक गाथाएं सुनाना।

इन सभी गलत विचारों को समाप्त करने का एक ही उपाय है वह यह है कि बच्चे के मन में अल्लाह का विश्वास अच्छी तरह बैठा दिया जाये तथा यह विश्वास उत्पन्न किया जाये कि अल्लाह की इच्छा एवं सहमति सब पर श्रेष्ठ है तथा उसकी सहायता के पश्चात मनुष्य को कोई भय नहीं।

हीनभावना

इसके भी विभिन्न कारण हैं बच्चे का अपमान, भर्त्सना, अधिक लाड-प्यार तथा प्रेम, सन्तानों के मध्य प्राथमिकता के आधार पर व्यवहार, शारीरिक दोष तथा निर्धनता एवं अनाथ होना।

माता-पिता तथा अभिभावकों का कर्तव्य है कि सन्तान के प्रशिक्षण के विषय में उक्त कारणों का ध्यान रखें तथा बच्चे को हीनभावना से बचाने के लिये उक्त कारणों को दूर करने का प्रयास करें।

ईर्ष्या

यह एक भयंकर चारित्रिक तथा सामाजिक रोग है, इससे बच्चे को दूर रखने के लिये यह आवश्यक है कि बच्चे के साथ नम्रता, प्रेम तथा स्नेह एवं सहानुभूति का व्यवहार किया जाये, सन्तानों के मध्य समानता का व्यवहार किया जाये तथा बच्चे की किसी कमजोरी या त्रुटि पर चेतावनी देते समय कड़े शब्दों का प्रयोग न किया जाये न ही किसी बच्चे का हाल बताकर उसे लज्जित किया जाये।

क्रोध

क्रोध एक लज्जाजनक स्थिति है। जिस क्रोध से चरित्र तथा व्यवहार

पर बुरा प्रभाव पड़ता है उसको दूर करने के लिये आवश्यक है कि बच्चे के भोजन तथा चिकित्सा आदि की पूरी व्यवस्था की जाये, बच्चे को बुरी विशेषताओं तथा नामों से न बुलाया जाये तथा क्रोध से जो हानि होती है उससे बताया जाये।

सामाजिक प्रशिक्षण

बच्चे को आरम्भ से ही अच्छे सामाजिक नियमों तथा शिष्टाचारों का पालक बनाया जाये तथा दूसरों के साथ अच्छे व्यवहार की शिक्षा दी जाये। सामाजिक प्रशिक्षण हेतु निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना अनिवार्य है।

१. मनोवैज्ञानिक नियमों की शिक्षाः-

बच्चे के लिए आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही उसमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण विशेषताओं को उत्पन्न करने का प्रयास किया जाये जैसे

संयम तथा अल्लाह का भय, समानता तथा भाईचारगी, दया व प्रेम, त्याग, बलिदान, क्षमा, साहस एवं धैर्य।

उच्चतम सामाजिक प्रशिक्षण के लिए उक्त सभी गुणों का बच्चे में होना आवश्यक है, इन्हीं के द्वारा उसे जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा इन्हीं गुणों द्वारा वह अच्छे समाज के निमार्ण में सक्रिय भाग लेगा।

२. दूसरों के अधिकारों का ध्यानः

बच्चों के प्रशिक्षण में इस नियम का अत्याधिक महत्व है, इस गुण से समाज की अनेकों प्रकार की बुराइयां दूर हो जाती हैं तथा लोगों को सुख शान्ति प्राप्त होती है।

सामाजिक अधिकारों में माता-पिता, निकट सम्बन्धी, मित्रगण, तथा बड़ों के अधिकार महत्वपूर्ण हैं। इनमें से प्रत्येक के अधिकारों के पालन के लिए इस्लाम ने शिक्षा दी है। बच्चे को आरम्भ से ही इन अधिकारों के महत्व का ध्यान दिलाना आवश्यक है ताकि वह उनके पालन हेतु प्रयास करे तथा अपने व्यक्तित्व को उच्च शिष्टाचार का एक उदाहरण बना सके।

३. सामान्य सामाजिक शिष्टाचारः

बच्चे को प्रारम्भ से ही निम्नलिखित शिष्टाचारों का पाबन्द बनाना आवश्यक है, इससे बच्चों में शिष्टाचार तथा सभ्यता उत्पन्न होगी तथा समाज में उसको सम्मान की दृष्टि से देखा जायेगा, उनमें निम्न शिष्टचार महत्वपूर्ण हैं जैसे

खाने-पीने का शिष्टाचार, बात करने का शिष्टाचार, आज्ञा लेने के शिष्टाचार, प्रशंसा, रोगी को देखने तथा शोक व्यक्त करने आदि के शिष्टाचार।

इस्लाम ने उक्त शिष्टाचारों के विषय में स्पष्ट शिक्षायें प्रस्तुत की हैं। कुरआन तथा हदीस में इन शिष्टाचारों का वर्णन करके मुसलमानों को उस पर व्यवहार करने की प्रेरणा दी गई है। बच्चे को आरम्भ से इन शिष्टाचारों का पालन कराना इसलिए आवश्यक है कि उनके पालन बिना मनुष्य का जीवन उचित रूप से इस्लामी सांचे में ढल नहीं सकता।

४. समाज की देख-रेखः

इस्लाम में प्रत्येक बच्चे को बड़ा होकर अच्छे कामों को करना तथा बुरे कामों से बचना है यह उसका पूर्ण दायित्व है। इसलिए बच्चे को प्रशिक्षित करते हुए उसमें समाज की देख-रेख तथा लोगों की व्यवहारिक स्थिति पर दृष्टि रखने के गुण उत्पन्न करना चाहिए ताकि इस्लामी नियमों के अनुसार वह लोगों का मार्ग दर्शन कर सकें तथा कल्याणकारी कर्तव्य को सम्पन्न कराने योग्य बन सकें।

इस विषय में आवश्यक है कि

बच्चे में सच कहने का साहस तथा भलाई के लिए उचित ढंग मौजूद हो।

इसके अन्तर्गत बच्चों को यह उपदेश तथा शिक्षा देनी चाहिए कि उनके कथन तथा कर्म में अनुकूलता हो, तथा जब वह समाज सुधार हेतु कार्य क्षेत्र में आयें तो उनका व्यवहार सकारात्मक हो, बुराइयों के सुधार के लिए कर्मानुसार कार्य करें, लोगों के साथ व्यवहारिक ढंग से पेश आयें, कष्टों पर सन्तोष एवं धैर्य ध ाारण करें तथा पूर्वजों के जीवन को उदाहरण के रूप में सदैव सामने रखें।

मुसलमानों का सबसे बड़ा दायित्व यह है कि स्वयं तथा अन्य को बुरे कर्मों से रोकें और अच्छा कार्य करें तथा करायें क्योंकि इसी प्रक्रिया पर सम्पूर्ण मानव समाज की भलाई निर्भर है। इसलिए माता-पिता तथा अभिभावकों का कर्तव्य है कि सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सदैव इस ज़िम्मेदारी को सामने रखें तथा इसके पालन में उनको जिन विशेषताओं एवं गुणों की आवश्यकता है वह उनमें उत्पन्न करने का प्रयास करें।

हज़रत लुकमान की शिक्षा

सन्तान के प्रशिक्षण के विषय में हज़रत लुकमान की जो शिक्षाएं कुरआन में वर्णित हैं वह सभी मुसलमानों के लिए मार्गदर्शक हैं। वह अपने बेटे को सम्बोधित करते हुए कहते हैं :

''ऐ बेटे! तू अल्लाह के साथ किसी को सम्मिलित न करना इसलिये कि अल्लाह के साथ किसी को सम्मिलित करना महा पाप है।

ऐ बेटे! यदि तेरा पाप राई के दाने के बराबर भी हो तथा वह कहीं बड़े पत्थर के नीचे या आसमानों में या ज़मीन के भीतर कहीं भी छिपा हो तो भी अल्लाह उसे तेरे सामने अवश्य ही लायेगा, अल्लाह बड़ी से बड़ी तथा छोटी से छोटी वस्तुओं का भी ज्ञान रखता है।

ऐ बेटे! नमाज़ हमेशा पढ़ना, नेक कार्य बतलाया करना, बुरी बातों से मना करना, तथा तुम्हें जो भी कष्ट हो उस पर सन्तोष करना। निःसन्देह यह साहस के कार्य हैं, और घमंड से लोगों से मुंह न फेरना, तथा जमीन पर इतराते हुए (अकड़ कर) न चलना, तथा मध्यम मार्ग अपनाना, और अपनी आवाज़ धीमी रखना, क्योंकि सब आवाज़ों से बुरी आवाज़ गधे की है।'' (सूरेः लुकमान आयत ११-१३)

(प्रेस रिलीज़)

रबीउल अव्वल 1443 हिजरी का चाँद देखा गया

दिल्ली ७ अक्टूबर २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली से जारी अखबारी बयान के अनुसार आज २९ सफर १४४३ हिजरी अनुसार ७ अक्टूबर २०२१ बृहस्पतिवार मग्रिब की नमाज के बाद अहले हदीस मंज़िल स्थित उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद दिल्ली में मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली की एक महत्वपूर्ण मीटिंग आयोजित हुई रबीउल अव्वल महीने के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों के जिम्मेदारों और मिल्ली संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिस से अनेक राज्यों से चांद देखने की प्रमाणित खबर मिली। इसलिये मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली ने यह फैसला लिया है कि दिनांक ८ अक्टूबर २०२१ शुक्रवार को रबीउल अव्वल १४४३ हिजरी की पहली तारीख होगी। इन्शाअल्लाह

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए
मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

कुरआन की खूबियों का एतराफ

मौलाना अज़ीज़ अहमद मदनी

इस्लाम एक अमन पसन्द, मानवतावादी सर्वांगीण धर्म है। इस संसार के पालनहार का प्रिय दीन है जिसे अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) और पवित्र कुरआन से उल्लेख किया जाता है। यह अल्लाह की किताब और उसकी वाणी (कलाम) है पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक महत्वपूर्ण चमत्कार है यह अल्लाह की ऐसी वाणी है जिसके सामने अरबी जुबान व बयान पर अत्यंत कुशलता रखने वाले बेबस हो गये। यह किताब पूरी मानवता के लिये मार्गदर्शन का स्रोत है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''वास्तव में यह कुरआन तमाम संसार वालों के लिये सरासर नसीहत (उपदेश) ही है'' (सूरे क़लम-५२)

कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

''रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन उतारा गया जो लोगों को हिदायत करने वाला है और जिस में हिदायत की और सत्य और असत्य में अन्तर की निशानियां हैं'' (सूरे बक़रा-१८५०)

अल्लाह की इस किताब का एक एक अक्षर सत्य और बरहक है और इसमें परिवर्तन और संशोधन की कदापि गुंजाइश नहीं है बल्कि क़यामत तक इस की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि अल्लाह स्वयं इस का संरक्षक है। जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''हम ने ही इस कुरआन को नाज़िल फरमाया है और हम ही इसके रक्षक हैं'' (सूरे हिज्र-९)

कुरआन के बारे में इस सच्चाई और हक़ीक़त के बयान के बाद एक शुद्धबुद्धि रखने वाले इन्सान के लिये किसी समर्थन और अन्य लोगों की गवाही व समर्थन की बिल्कुल ज़रूरत नहीं लेकिन इस के बावजूद ऐसे आज़ाद ख्याल लोग जिन का जेहन कुरआन के बारे में साफ नहीं उनकी आंख खोलने के लिये उनके जैसे विचार रखने वालों, जो काफी प्रयासों के बाद किसी निष्कर्ष पर पहुंचे उनके अनुभव और कथनों को बयान करना उचित होगा ताकि ऐसे बहके हुए लोग इन कथनों और उदाहरणों से पाठ ले सकें और हक़ीक़त का एतराफ करके अपनी जुबान को बन्द रख सकें। निम्न में कुछ चिंतकों के कुरआन के संबन्ध में कथन पेश किये जा रहे हैं।

१. जर्मनी की भाषाविद स्पीकर बराउंज मारगेट वांस्टन बर्लन में एक भाषण में कहती हैं ''अगर्चे तमाम धार्मिक ग्रंथ अल्लाह की तरफ से नाज़िल (अवतरित) हुये इसके बावजूद पवित्र कुरआन ऐसा आकाशीय ग्रंथ है जिस में थोड़ा भी परिवर्तन नहीं हुआ और वह अपनी असली शकल में सुरक्षित है''

२. सर विलियम अपनी किताब ''लाइफ आफ मुहम्मद'' में लिखते हैं ''जो कुरआन हमारे पास आज मौजूद है यह वही है जो मुहम्मद ने दुनिया के सामने पेश किया था। हम अत्यंत ठोस अनुमानों के आधार पर कह सकते हैं कि हर एक

आयत (वाक्य) जो कुरआन में है असली है।''

३. रूस का प्रसिद्ध दार्शनिक काउन्ट लियो टालिस्टाई अपनी किताब ''दी लाइट आफ रिलीजियन'' में पवित्र कुरआन के बारे में लिखता है ''कुरआन मुसलमानों की एक धार्मिक किताब है जिसके बारे में उनका ख्याल है कि इसको अल्लाह ने नाज़िल किया है। यह किताब मानवीय ज्ञान के मार्गदर्शन के लिये एक बेहतरीन मागदर्शक है, इसमें सभ्यता है, शालीनता है, संस्कृति है और नैतिकता की इस्लाह के लिये मार्गदर्शन है अगर सिर्फ यह किताब दुनिया के सामने होती और कोई रिफारमर पैदा न होता तो भी यह मानव जगत के मार्गदर्शन के लिये काफी थी।''

४. अमरीकी प्राच्यविद आर, एफ बोदली अपनी किताब ''हयातुर्रसूल मुहम्मद'' में लिखता है ''हमारे सामने एक समकालीन किताब है जो अपनी असलियत, दुरूस्तगी और सुरक्षित अवस्था में होने में विशिष्ट है। यह किताब जिस तरह नाज़िल हुई उसी तरह सहीह और दुरूस्त है इसमें मामूली भी संदेह नहीं, यह किताब कुरआन है। वह आज भी उसी तरह है जिस तरह इसे पहली बार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निगरानी में तर्तीब (अनुक्रम) दिया गया। इसके मजामीन खुजूर के डंठल, पत्तों और हडडियों पर बड़े आश्चर्यजनक अन्दाज़ में लिखे गये इसकी सूरतें और असली आयात सुरक्षित हैं।''

५. एक अध्यापक ''सनालीस'' लिखता है कि ''कुरआन वह आम कानून है जिस में असत्य की कोई गुंजाइश नहीं यह किताब हर काल और स्थान के योग्य और शुद्ध है। अगर मुसलमान सहीह अर्थों में इस किताब को मजबूती से पकड़ लें और इसकी शिक्षाओं और आदेशों पर अमल करें तो दुनिया का तत्वाधान और मार्गदशन उनके हाथ में होगा जैसा कि भूतकाल में रहा या कम से कम उस की स्थिति सभ्य कौमों जैसी हो जाएगी।''

६. एक्स लियोरज़ोन फ्रांसीसी दार्शनिक कहता है ''कुरआन एक उज्जवल और हिकमत से भरी किताब है इसमें कोई शक नहीं कि यह एक ऐसे शख्स पर नाज़िल हुई जो सच्चा पैगम्बर और अल्लाह ने उन्हें भेजा था''

७. एक फ्रांसीसी शोधकर्ता डा० मोरेस लिखते हैं ''निसन्देह कुरआन एक सर्वश्रेष्ठ किताब है''।

इन उपर्युक्त संदर्भों ने यह हकीकत स्पष्ट कर दी कि अन्य लोग भी जो इस्लाम धर्म को नापसन्द करते हैं वह भी कुरआन की सच्चाई, और इसके ईश्वरीय ग्रंथ और सुरक्षित होने को स्वीकार करने पर मजबूर हैं हक़ीक़त वह जादू है जो सर चढ़ कर बोलता है हक़ीक़त स्वयं स्वीकार करवा लेती है मनवाई नहीं जाती। (सारांशः कुरआन करीम गैर मुस्लिमों की नज़र में'' थेसिसः सईद अनूज़र तानडवी, एवं अल कुरआनो फी नजरे गैरिल मुस्लिमीन, अलमेराज डॉट काम) यह भी एक उज्जवल हकीकत है कि दुनिया में आज सबसे ज़्यादा तिलावत (पढ़ी) जाने वाली, शोध और अध्ययन की जाने वाली और सीने में महफूज़ की जाने वाली किताब पवित्र कुरआन है। दुनिया का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां इस किताब को अपने सीने में महफूज़ रखने वाले मौजूद न हों चाहे वह किसी रंग व नस्ल के लोग हों। यह कुरआन की महानता, पवित्रता प्रियता और इसके सुरक्षित रहने की सबसे बड़ी दलील है।

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े

(१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685

(ICIC Bank) Chandni Chowk, Delhi-110006

(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द